अथ त्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**सविताः**। छन्दः—**त्रिष्टुप्**। स्वरः—**धैवतः**।

ज्ञान+वाङ्माधुर्य

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ १॥

१. हे **देव**=सब दिव्य गुणों के पुञ्ज तथा **सवितः**=सकल जगदुत्पादक तथा सब प्रेरणाओं के देनेवाले प्रभो! **यज्ञम् प्रसुव**=हमें यज्ञ की प्रेरणा दीजिए। प्रेरणा देने का अधिकार तभी प्राप्त होता है जब वे गुण स्वयं हममें हों। इसी दृष्टिकोण से यहाँ 'देव सवितः' इस क्रम से शब्दों का प्रयोग है। प्रभु स्वयं दिव्य गुणोंवाले हैं, दिव्य गुणों के पुञ्ज हैं, वे हृदयस्थरूपेण जीव को प्रेरणा प्राप्त कराते हैं। प्रभु स्वयं सृष्टिरूप महान् यज्ञ करनेवाले हैं, वे प्रभु हमें भी यज्ञ की प्रेरणा प्राप्त कराएँ। २. हे प्रभो! **यज्ञपतिम्**=यज्ञों के पति, यज्ञों के रक्षक मुझे **भगाय**=ऐश्वर्य के लिए **प्रसुव**=प्रेरित कीजिए, अर्थात् मुझे ऐश्वर्य प्राप्त कराइए। मैं यज्ञशील बनकर ऐश्वर्य को प्राप्त करनेवाला बनूँ। ३. हे प्रभो! आप **दिव्यः**=सदा प्रकाश में निवास करनेवाले हैं, **गन्धर्वः**=(गां धरति) वेदवाणी का धारण करनेवाले हैं, **केतपूः**=हमारे ज्ञानों को पवित्र करनेवाले हैं। आपकी कृपा से आपका उपासक 'दिव्य, गन्धर्व, केतपूः' विद्वान् **नः**=हमारे **केतम्**=ज्ञान को **पुनातु**=पवित्र करे। हमें प्रकाश में निवास करनेवाले, वेदवाणी के धारक, ज्ञान को पवित्र करनेवाले आचार्य प्राप्त हों, उनके सम्पर्क से हमारा ज्ञान चमक उठे। ४. **वाचस्पतिः**=सब वाणियों का स्वामी व रक्षक प्रभु **नः**=हमारी **वाचम्**=वाणी को **स्वदतु**=स्वादवाला बनाए। हमारी वाणी में माधुर्य हो,। ५. ज्ञानी व मधुर वाणीवाले बनकर हम यज्ञियवृत्ति से अधिक-से-अधिक लोकहित में प्रवृत्त हों और दुःखी मनुष्य-समूह का कल्याण करते हुए प्रस्तुत मन्त्र के ऋषि 'नारायण' बनें, नरसमूह के शरणस्थान।

भावार्थ—प्रभु हमें यज्ञ की प्रेरणा दें। यज्ञपति बनकर हम ऐश्वर्यशाली हों। प्रभु हमारे ज्ञान को पवित्र करें और वाणी को माधुर्य से भर दें।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**सविताः**। छन्दः—**निचृद्गायत्री**। स्वरः—**षड्जः**।

वरेण्य भर्ग

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ २॥

१. गतमन्त्र के अनुसार 'यज्ञ+ज्ञान+व वाङ्माधुर्य' को अपनाकर हम अपने जीवन को इस प्रकार उच्च बनाएँ कि हम प्रभु के तेज को धारण करनेवाले बनें। प्रस्तुत मन्त्र में कहते हैं कि **यः**=जो **नः**=हमारी **धियः**=बुद्धियों को **प्रचोदयात्**=प्रकृष्ट यज्ञादि की प्रेरणा प्राप्त कराए **तत्सवितुः**=(स चासौ सविता च) उस सर्वव्यापक (तन् विस्तारे) सकल जगदुत्पादक व प्रेरक **देवस्य**=दिव्य गुणों के पुञ्ज प्रभु के **वरेण्यम्**=वरने योग्य **भर्गः**=(भ्रस्ज पाके) पापों को भून डालनेवाले तेज को **धीमहि**=हम धारण करें। २. उसी तेज की शक्ति को हम

अपना लक्ष्य बनाएँ। यह लक्ष्य ही हमारी पापवृत्तियों को समाप्त करेगा। इस लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए हम बुराइयों से बचे रहेंगे। ३. हृदयस्थरूपेण वे प्रभु हमें सदा उत्तम कर्मों की प्रेरणा दे ही रहे हैं। 'उस प्रभु के समान मुझे भी तेजस्वी बनना है', यही सर्वमहान् लक्ष्य है। लक्ष्य की ऊँचाई के अनुपात में ही हमारी उन्नति होती है। ऊँचे लक्ष्य से हम बुराइयों में फँसने से बचते हैं और प्रभु-जैसे बनते चलते हैं। प्रभु 'ब्रह्म' हैं, हम 'ब्रह्म इव' हो जाते हैं। लोहा अग्नि में पड़कर अग्नि-सा देदीप्यमान हो उठता है।

भावार्थ—हम निरन्तर प्रभु का ध्यान करें, प्रभु की तेजस्विता हमारे लिए वरेण्य हो। यह लक्ष्य हमें मार्गभ्रष्ट होने से बचाएगा।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**सविता**। छन्दः—**गायत्री**। स्वरः—**षड्जः**।

दुरित-दूरीकरण

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रन्तन्नऽआ सुव॥ ३॥

१. हे **देव**=दिव्य गुणों के पुञ्ज! **सवितः**=सबके प्रेरक प्रभो! **विश्वानि**=हमारे न चाहते हुए भी हममें घुस आनेवाली **दुरितानि**=बुराइयों को **परासुव**=हमसे दूर कर दीजिए। २. बुराइयों को दूर करके **यत् भद्रम्**=जो शुभ है, कल्याणकर है **तत्**=उसे **नः**=हमें **आसुव**=सर्वथा प्राप्त कराइए। ३. हमारे जीवन का कार्यक्रम यही हो कि हम दुरितों को दूर करते चलें और भद्र बातों को ग्रहण करते जाएँ। यही उत्तम बनने का मार्ग है, यही आपके समीप पहुँचने का साधन है। यही वास्तविक उपासना है। ४. यहाँ मन्त्र के पूर्वार्ध में '**नः**' का प्रयोग नहीं, पर उत्तरार्ध में **नः** का प्रयोग है। दोष-दूरीकरण में दूसरों के दोषों को हमें देखना ही नहीं चाहिए, परन्तु कल्याण-प्राप्ति की प्रार्थना सभी के लिए करनी चाहिए, इसीलिए उत्तरार्ध में 'नः' शब्द का सौन्दर्य स्पष्ट है। ५. वस्तुतः हम दोषों को दूर करके व भद्र का संग्रह करके ही मन्त्र के ऋषि 'नारायण' बनने की तैयारी करते हैं।

भावार्थ—प्रभुकृपा से हमारे दोष दूर हों और हमें भद्र की प्राप्ति हो।

ऋषिः—**मेधातिथिः**। देवता—**सविता**। छन्दः—**गायत्री**। स्वरः—**षड्जः**।

वसु-विभाग (Distribution of Wealth)

विभक्तारꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम्॥ ४॥

१. गतमन्त्र में प्रार्थित दुरितों को दूर करने व भद्र के प्रापण का प्रकार यह है कि प्रभु धन का विभाग करते हैं। उस धन के केन्द्रित होने पर ही दोष उत्पन्न होते हैं। मनुष्य भी नासमझी व स्वार्थपरता के कारण धन पर केन्द्रित होने लगता है और सारा सामाजिक शरीर अस्वस्थ हो जाता है। २. अतः मन्त्र में कहते हैं कि हम **वसोः**=निवास के लिए आवश्यक धन के **विभक्तारम्**=विभागपूर्वक देनेवाले प्रभु को **हवामहे**=पुकारते हैं, अर्थात् हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे हममें सदा उचित धन-विभाग की व्यवस्था किये रक्खें। हमारे राष्ट्र के राजा आदि को प्रभु की ऐसी प्रेरणा मिले कि वे प्रजा में धन को कहीं केन्द्रित न होने दें। ३. यह धन जहाँ (क) **वसु**=निवास के लिए आवश्यक साधनों का प्रापक है, वहाँ (ख) **चित्रस्य**=(चित् र) यह ज्ञान देनेवाला है, इसके द्वारा हम ज्ञानवर्धक ग्रन्थों का संग्रह कर पाते हैं। इस धन को हम सदा साधन के रूप में देखते हैं। यह साध्य बनकर हमें अभिभूत करके उल्लू नहीं बना देता। साथ ही (ग) **राधसः**=(राध संसिद्धौ) यह धन हमारे कार्यों का साधक है। यह धन कार्यों में सफलता प्राप्त करानेवाला है। यह स्पष्ट है

कि इतना ही धन ठीक है जो 'वसु+चित्र व राधस्' है। ३. हम उस प्रभु को पुकारते हैं जो **सवितारम्**=सकल जगदुत्पादक हैं, वस्तुतः हमें भी उत्पादन करके ही धनार्जन करना चाहिए। ५. **नृचक्षसम्**=वे प्रभु सब मनुष्यों को देखनेवाले हैं (चक्ष्=To look after) हम भी सभी को देखनेवाले बनें, सभी का ध्यान करें। जब हम स्वार्थी बन जाते हैं तभी धन के केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती है।

भावार्थ—प्रभु धन का विभाग करते हैं। यदि धन एक स्थान पर केन्द्रित होने लगता है तो दुरितों की वृद्धि हो जाती है, अतः 'मेधातिथि' समझदारी से चलनेवाला, धन को केन्द्रित नहीं होने देता।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**परमेश्वरः**। छन्दः—**स्वराडतिशक्वरी**। स्वरः—**पञ्चमः**।

ज्ञान के लिए ब्राह्मण को

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयायाऽ अयोगूं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्॥ ५॥

१. गतमन्त्र के अनुसार राष्ट्र-शरीर के स्वास्थ्य के लिए धन का विभाग व विकेन्द्रियकरण आवश्यक है। राजा को राष्ट्र की उचित व्यवस्था के लिए यह धन-विभाग करना ही चाहिए। कर व्यवस्था भी इस प्रकार से हो कि धन केन्द्रित न हो पाये। प्रसंगवश अब यह भी कहते हैं कि राष्ट्र में राजा किस-किस कार्य के लिए किस-किस व्यक्ति को नियत करे। २. **ब्रह्मणे**=ज्ञान के प्रचार के लिए **ब्राह्मणम्**=वेद व ईश्वर के वेत्ता ज्ञानी पुरुष को **आलभते**=नियत करे। ज्ञान ज्ञानी ही तो फैलाएगा। 'आलभते' क्रिया २२वें मन्त्र में आई है। वही क्रिया सर्वत्र उपयुक्त होगी। २. **क्षत्राय राजन्यम्**=लोगों को व राष्ट्र को क्षतों से बचाने के लिए क्षत्रिय को प्राप्त करे। राष्ट्र की रक्षा क्षत्रियों से ही होगी। क्षत्रियों के अभाव में राष्ट्र शत्रुओं से आक्रान्त होकर पराधीन हो जाएगा। ३. **मरुद्भ्यः**=सब मान्य मनुष्यमात्र के लिए **वैश्यम्**=वैश्य को प्राप्त करे। जहाँ मनुष्यों की बस्ती बसानी है वहाँ वैश्यों के लिए मण्डी भी बनानी है। मनुष्यों के दैनन्दिन जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं को ये ही प्राप्त कराएँगे। ४. **तपसे शूद्रम्**=तप के लिए, अर्थात् कष्ट व श्रम के लिए शूद्र को प्राप्त करे। **शूद्र**=शु द्रवति=यह शीघ्रता से कार्य करनेवाला होता है, शु उन्दति=शीघ्र पसीने से गीला होनेवाला होता है। यह ज्ञान, बल व धन-प्राप्ति की योग्यता के अभाव में श्रम से ही राष्ट्र की उपयोगी सेवा करता है। शरीर में जो पाँव का स्थान है, राष्ट्र-शरीर में वही स्थान शूद्र का है। राष्ट्र के सब बड़े-बड़े भवन इन्हीं के श्रम पर आश्रित होते हैं। ५. **तमसे**=अन्धकार में काम करने के लिए **तस्करम्**=चोर को नियत करे। 'तत् करोतीति तस्करः'=अन्धकार में कार्य करने में समर्थ पुरुष को नियत करे। ६. **नारकाय वीरहणम्**=(नारम् नरसमूहं कायति) शत्रुओं के नरसमूहों को रुलाने के लिए वीरों को नियत करे, जो शत्रुपक्ष से आनेवाले व्यक्तियों को तीरों की मार से समाप्त कर दें। **पाप्मने क्लीबम्**=पाप के लिए नपुंसक को प्राप्त करे। इस वाक्य के दो अर्थ हो सकते हैं—(क) पाप के लिए नपुंसक-सा हो जाए, अर्थात् पाप कर ही न सके अथवा (ख) नपुंसक ही पाप करेगा, वीर पाप को अपनी शोभा के विपरीत समझेगा' ८. **आक्रयाय अयोगूम्**=सब प्रकार के पदार्थों के क्रय-विक्रय के लिए खूब परिश्रमी पुरुष को नियत करे। 'अयोगू' शब्द का अर्थ 'लोहार' है। यह भरपूर श्रम का प्रतीक है। इधर-उधर की भागदौड़ से न थकनेवाला पुरुष ही इस कार्य के लिए उपयुक्त है। ९. **कामाय पुँश्चलूम्**=इच्छाशक्ति को बलवान् बनाने के लिए

मनुष्यों में हलचल उत्पन्न करनेवाले को प्राप्त करे। १०. **अतिक्रुष्टाय मागधम्**=महान् वक्तृत्व के लिए मागध–स्तुतिपाठक को प्राप्त करे, भाटों को अत्युक्तिपूर्ण कथनों के उपयुक्त जाने। किसी की निन्दा करनी हो तो मागध को नियुक्त करे, ये लोग प्रशंसा करते हुए प्रतीत होते हैं और इष्टनिन्दा को पूर्ण सफलता के साथ कर सकते हैं।

भावार्थ–राजा को चाहिए कि राष्ट्र के भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए उपयुक्ततम व्यक्ति को नियत करे।

ऋषिः–**नारायणः**। देवता–**सविता**। छन्दः–**निचृदष्टिः**। स्वरः–**गान्धारः**।

नृत्य के लिए सूत को

नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभꣳहसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं धैर्याय तक्षाणम्॥ ६॥

११. **नृत्ताय सूतम्**=नृत्य के लिए–इशारों से नृत्य की प्रेरणा देनेवाले को प्राप्त करे। १२. **गीताय शैलूषम्**=सम्मिलित गायन के लिए शैलूष (One who beats tune at a concert) को–करताल बजानेवाले को रक्खो। १३. **धर्माय**=राष्ट्र के कानून के लिए **सभाचरम्**=धर्मसभा के सभासद् (Assembly's member) को प्राप्त करो। १४. **नरिष्ठायै भीमलम्**=(नरि-ष्ठा) नेतृत्व के पद पर स्थिति के लिए भीतिप्रद, ओजस्वी, रोबवाले पुरुष को नियत करे। १५. **नर्माय रेभम्**=परिहास आदि की क्रीड़ा के लिए स्तोता को अथवा बोलने में चतुर वाचाट पुरुष को प्राप्त करे। १६. **हसाय कारिम्**=हँसी-मखौल के लिए नकल उतारनेवाले को प्राप्त करे। १७. **आनन्दाय**=आनन्द प्राप्ति के लिए **स्त्रीषखम्**=पत्नी की मित्रता को प्राप्त करे। वस्तुतः सारा गृहसुख पत्नी के साथ समान विचारवाला होने में ही है। १८. **प्रमदे कुमारीपुत्रम्**=कुमारी के पुत्र को प्रमादयुक्त कार्यों के लिए जाने। जिस प्रकार कुमारी से प्रमादवश वह सन्तान हो गई, अतः उस सन्तान में भी वही प्रमाददोष उत्पन्न हो जाएगा। ऐसा सन्तान प्रायः प्रमादयुक्त कार्यों को करनेवाला होगा। १९. **मेधायै रथकारम्**=मेधा के लिए रथकार को प्राप्त करे। जैसे एक रथकार भिन्न-भिन्न रथांगों को कुशलता से संगत करके रथ का निर्माण करता है उसी प्रकार उसका अनुसरण करता हुआ पुरुष अपनी मेधा को बढ़ानेवाला होता है। रथ आदि के निर्माण में बुद्धिकौशल व्यक्त होता है। २०. **धैर्याय**=धैर्य के लिए **तक्षाणम्**=तरखान को प्राप्त करे। 'किस प्रकार सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चित्रकारी व कारीगरी के कार्यों को यह तक्षा धैर्यपूर्वक करता चलता है', इस कर्म को देखकर दूसरा मनुष्य भी धैर्य से काम करने का पाठ पढ़ता है। मुझे एक बढ़ई की भाँति धैर्यवाला (As patient as a carpenter) बनना है' ऐसा हमें निश्चय करना चाहिए।

भावार्थ–राजा राष्ट्र में नृत्य आदि कार्यों के लिए सूत आदि को नियुक्त करे।

ऋषिः–**नारायणः**। देवता–**विद्वांसः**। छन्दः–**निचृदष्टिः**। स्वरः–**गान्धारः**।

तप के लिए कौलाल को

तपसे कौलालं मायायै कर्मारꣳ रूपाय मणिकारꣳ शुभे वपꣳशरव्यायाऽइषुकारꣳ हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे मृगयुमन्तकाय श्वनिनम्॥ ७॥

२१. **तपसे कौलालम्**=तपनेवाले कार्यों के लिए कुम्हार के पुत्र को प्राप्त करे। वह सदा भट्टी के तपाने से उन कार्यों के लिए अधिक अभ्यस्त होता है। ऋत, सत्य आदि उत्तम तप के लिए कुलीन पुरुष को संयुक्त करे, यह कुल में कलह होने के भय से तप

को न छोड़ेगा। २२. **मायायै कर्मारम्**=बुद्धि व आश्चर्य (माया) के कार्य करने के लिए लोहार को प्राप्त करे। 'किस प्रकार लोहार लोहे को लेकर उसे अद्भुत यन्त्र में परिवर्तित कर देता है', यह सब जादू-सा प्रतीत होता है। २३. **रूपाय मणिकारम्**=आभूषणादि सुन्दर वस्तु बनाने के लिए मणिकार को प्राप्त करे। २४. (क) **शुभे**=मुखादि की शोभा बढ़ाने के लिए **वपम्**=नाई को प्राप्त करे, नाई बालों को ठीक-ठाक करके 'शुन्धिशिरः' सिर आदि का ठीक शोधन कर देता है। (ख) अथवा **शुभे** =राष्ट्र की शोभा के लिए **वपम्**=बीज को बोनेवाले किसान को प्राप्त करे। वे ही राष्ट्र में अन्नादि की समुचित वृद्धि करके राष्ट्र की शोभा को बढ़ाते हैं। २५. **शरव्यायै इषुकारम्**=शरसमूह को प्राप्त करने के लिए बाण बनानेवाले को प्राप्त करे। २६. **हेत्यै**=दूर फेंकनेवाले अस्त्रों के लिए **धनुष्कारम्**=धनुष बनानेवाले शिल्पी को प्राप्त करे। २७. **कर्मणे ज्याकारम्**=युद्ध के कार्यों के लिए धनुष की डोरी आदि बनानेवाले शिल्पी को प्राप्त करे। २८. **दिष्टाय रज्जुसर्जम्**= आज्ञाओं के पालन कराने के लिए रज्जु का निर्माण करनेवाले को नियत करे। आज्ञा न माननेवालों को बन्धन में डालने के लिए वह सदा तैयार हो। नियमन का भय ही शासन का पालन कराता है। २९. **मृत्यवे मृगयुम्**=दुष्ट प्राणियों के वध के लिए, ग्राम के आतङ्क का कारण बन जानेवाले चीते आदि को मारने के लिए शिकारी को प्राप्त करे। ३०. **अन्तकाय**=दुष्टों का अन्त करने के लिए **श्वनिनम्**=कुत्तों को पालनेवाले शिकारी (Hound) को प्राप्त करे।

भावार्थ—मृगयु, श्वनी आदि को भी राजा राष्ट्र के उपयोगी कार्यों में विनियुक्त करे। उनके द्वारा शेर आदि की हत्या कराके ग्रामवासियों के आतङ्क को दूर करे।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**विद्वांसः**। छन्दः—**कृतिः**। स्वरः—**निषादः**।

नदियों के लिए पौञ्जिष्ठ को

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्यऽउन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदमयेभ्यः कितवमीर्यतायाऽअकितवं पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम्॥ ८॥

३१. (क) **नदीभ्यः**=नदियों के लिए **पौञ्जिष्ठम्**=मछियारे को प्राप्त करे। नदियों पर मछली आदि के पकड़ने के कार्य को ये ही करेंगे अथवा (ख) नदियों के लिए काष्ठखण्डों के पुञ्जों पर स्थित होकर (बेड़ों=rafts पर) नदियों को पार करानेवालों को प्राप्त करे। नदियों पर ये नाविक यात्रियों को पार करने का कार्य करेंगे। ३२. **ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्**=रीछ आदि जंगली, क्रूर पशुओं के लिए निषाद व जंगली-जाति के पुरुषों को प्राप्त करे। वे ही इनके वध आदि की ठीक व्यवस्था रखेंगे। ३३. **पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्**= पुरुषों में व्याघ्र के समान शूरवीर के लिए, अर्थात् ऐसे व्यक्तियों को नियन्त्रण में रखने के लिए, दुर्दान्त प्रचण्ड वीर को, अदम्य पुरुष को नियत करे, ३४. (क) **गन्धर्वाप्सरोभ्यः**=सुन्दर युवक व युवतियों के लिए, अर्थात् इनके संरक्षण के लिए व अध्ययनाध्यापन के लिए **व्रात्यम्**=(व्रताः मनुष्याः तेषु साधुः) मनुष्यसमूहों में उत्तमता से वर्त्त सकनेवाले को नियत करे। (ख) **गन्धर्व**=किसान (गां धारयति) **अप्सर**=मजदूर (कर्म में चलता है) लोगों में संघों के सञ्चालन में उत्तम पुरुष को नियत करे जो संघ (Union) को ठीक नियन्त्रण में रख सके। ३५. **प्रयुग्भ्यः**=परीक्षणों के लिए, प्रयोगों के लिए (प्रयोजनं प्रयुक्) **उन्मत्तम्**=उन्मत्त को (One who is mad after them) जिसे परीक्षणों की ख़ब्त हो, उसे

नियत करे। दूसरा व्यक्ति तो तनिक-सी असफलता पर परीक्षण को बीच में ही छोड़ देगा। ३६. **सर्पदेवजनेभ्यः**=सर्प, अर्थात् गुप्तचर (अपसर्पः चरः स्पशः) तथा देवजन (दीव्यन्ति व्यवहरन्ति) व्यापारी वर्ग के लिए **अप्रतिपदम्**=जो न जाना जा सके तथा जो अनुत्तम=बहुत अधिक ज्ञानवाला है, उसे नियत करे। गुप्तचर पहचाने न जा सकें और व्यापारी बड़े समझदार हों। ३७. (क) **अक्षेभ्यः**=पासों के लिए **कितवम्**=जुआरी को प्राप्त करें (ख) अथवा उत्तम गतियों के लिए ज्ञानी पुरुषों को नियत करे (कित संज्ञाने, चिकेति) ३८. **ईर्यतायै**=सन्मार्ग पर चलने के लिए **अकितवम्**=न जुआरी अर्थात् श्रमशील कृषक आदि को प्राप्त करे। उल्लिखित दोनों वाक्यों का भाव **'अक्षैर्मा दीव्यः, कृषिमित्कृषस्व'** इन आदेशों में स्पष्ट है, 'जुआ न खेलो, खेती ही करो'। ३९. **पिशाचेभ्यः विदलकारीम्**=रक्त-मांसभोजी मनुष्यों के लिए ऐसे व्यक्ति को नियत करो जो उनमें फूट डाल सके (Split-maker=वि-दल-कारी) ४०. **यातुधानेभ्यः**=चोर-डाकुओं के लिए, प्रजा-पीड़कों के लिए **कण्टकीकारम्**=नोकदार शस्त्रधारी सैनिकों को, सैन्य तैयार करनेवालों को नियत करे। यातुधानों से प्रजारक्षण के लिए कुन्तधारी (Lancers) पुरुषों को नियत करे।

भावार्थ—राजा ने राष्ट्रोन्नति के लिए विविध पुरुषों को विविध कार्यों में लगाना है। मछियारों से लेकर कुन्तधारियों तक सभी की यथास्थान नियुक्ति करनी है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**विद्वान्**। छन्दः—**भुरिगत्यष्टिः**। स्वरः—**मध्यमः**।

सन्धि के लिए जार को

सन्धये जारं गेहायोपपतिमार्त्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदानमराद्ध्याऽएदिधिषुःपतिं निष्कृत्यै पेशस्कारीꣳसंज्ञानाय स्मरकारीं प्रकामोद्यायोपसदं वर्णीयानुरुधं बलायोपदाम् ॥ ९॥

४१. **सन्धये जारम्**=सन्धि के लिए वृद्ध (जीर्ण) पुरुष को प्राप्त करे। ये वृद्ध पुरुष शान्ति से बात कर सकते हैं और इन्हें एक लम्बा अनुभव प्राप्त हो चुका होता है, अतः ये सन्धि के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। ४२. **गेहाय**=घर की रक्षा के लिए **उपपतिम्**=एक उपसंरक्षक (Assistant Guard) को नियुक्त करे। स्वयं तो राजा राजकार्यों में व्यस्त रहेगा न कि घर की ही रक्षा करता रहेगा। ४३. **आर्त्यै**=पीड़ा को दूर करने के लिए **परिवित्तम्**=सब प्रकार से ज्ञान प्राप्त करनेवाले को प्राप्त करे। सब प्रकार का सच्चा ज्ञान (true information) प्राप्त करके कष्ट के समय पर उसका उपयोग करके लोगों का कष्टों से संरक्षण करना इसका काम होगा। ४४. **निर्ऋत्यै**=भूख, महामारी आदि कष्टों को दूर करने के लिए **परिविविदानम्**=सब ओर से साधनों को प्राप्त करनेवाले को नियुक्त करे। ४५. **अराद्धयै**=दरिद्रता को दूर करने के लिए **एदिधिषुः पतिम्**=सबसे प्रमुख, धारण करने योग्य सम्पत्ति के पालक को प्राप्त करे (अग्रे दिधिषति धारयितुमिच्छति) पिछले तीन वाक्यों का अर्थ इस रूप में भी होता है कि बड़े भाई के अविवाहित होते हुए विवाहित होनेवाले छोटे भाई को पीड़ा (परिवित्तम्) के लिए प्राप्त करता है। बड़े भाई की उपेक्षा करके दायभाग लेनेवाले छोटे भाई को (परिविविदानम्) निर्ऋति=महान् कष्ट के लिए जाने। बड़ी कन्या के रहते छोटी के साथ विवाह करनेवाले **एदिधिषुः पतिम्**=व्यक्ति को असमृद्धि के लिए जाने। इसलिए राजा कानून द्वारा इन तीनों स्थितियों पर प्रतिबन्ध लगाये। ४६. **निष्कृत्यै**=सुधारने के लिए **पेशस्कारीम्**=सौन्दर्य बढ़ाने के साधनों को बनानेवाले को प्राप्त करे। ४७. **संज्ञानाय**=उत्तम ज्ञान के लिए **स्मरकारीम्**=स्मरण करानेवाली क्रिया को

प्राप्त करे। ४८ **प्रकामोद्याय**=यथेष्ठ बातचीत करने के लिए, जी खोलकर बात करने के लिए **उपसदम्**=निकटतम मित्र को प्राप्त करे। ४९. **वर्णाय अनुरुधम्**=किसी बात को स्वीकार करा देने के लिए उचित ढंग से अनुरोध करनेवाले पुरुष को नियत करे। ५०. **बलाय उपदाम्**=बल की वृद्धि के लिए भेंट व पुरस्कार देनेवाले को प्राप्त करे। पुरस्कार देने से सैनिकों का उत्साह निश्चितरूप से बढ़ेगा।

भावार्थ—राजा राष्ट्र में सन्धि आदि कार्यों के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को नियत करे।

नोट—आर्ति का अर्थ पीड़ा के लिए सामान्यत होता है। यहाँ पीड़ा की निवृत्ति के लिए किया गया है। जैसे 'मशकाय धूमः' का अर्थ 'मच्छरों की निवृत्ति के लिए धूँआ' होता है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**विद्वान्**। छन्दः—**भुरिग्त्यष्टिः**। स्वरः—**गान्धारः**।

विनाश कार्यों के लिए

उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वार्भ्यः स्त्रामꣳ स्वप्नायान्धमधर्माय बधिरं पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षायाऽअभिप्रश्निनं मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥ १०॥

५१. **उत्सादेभ्यः**=विनाशकारी कार्यों के लिए **कुब्जम्**=कुबड़े को नियत करे। इन लोगों की बुद्धि निर्माण की अपेक्षा विनाश में अधिक चलती है। कुब्ज का शब्दार्थ है—'कुत्सितं उब्जति'=बुरे ढंग से दबाव (Subdue) में रखता है ५२. **प्रमुदे वामनम्**=विनोदकारी कार्यों के लिए बौने पुरुष को प्राप्त करे। बौने पुरुष को देखकर ही कुछ अजीब-सा प्रतीत होने लगता है। इनमें अपने कद की कमी को प्रतितुलित करने के लिए हास्य आदि की शक्ति अधिक होती है। ५३. **द्वार्भ्यः**=द्वारों की रक्षा के लिए **स्त्रामम्**=जल से क्लिन्न आँखोंवाले को प्राप्त करे। द्वारपाल के स्थान पर स्त्राम की नियुक्ति करे न कि स्नेहशून्य आँखोंवाले की। ५४. **स्वप्नाय**=नींद के लिए **अन्धम्**=लोचनहीन को नियुक्त करें, अर्थात् जिस जगह केवल सोने का कार्य हो वहाँ नेत्रहीन पुरुष की नियुक्ति कर दे, चूँकि यह सोने के कार्य को सम्यक् पूर्ण कर सकेगा। ५५. **अधर्माय**=अधर्म के लिए **बधिरम्**=बहिरे को प्राप्त करे। जो बड़ों की प्रेरणा को नहीं सुनता (Turns a deaf ear to them) वह अधर्म के मार्ग की ओर चला ही जाता है। शास्त्रश्रवण करनेवाला व्यक्ति ही धर्म के मार्ग पर चल पाता है। ५६. **पवित्राय भिषजम्**=पवित्रता के लिए वैद्य को नियत करे। इसका कार्य जहाँ सफाई का ध्यान करना होगा, वहाँ बीमारियों को न फैलने देने तथा मानस पवित्रता उत्पन्न करने का भी ध्यान करना होगा। ५७. **प्रज्ञानाय**=प्रकृष्ट ज्ञान के लिए **नक्षत्रदर्शम्**=नक्षत्रों का दर्शन करनेवाले को, अर्थात् गणित ज्योतिष के पण्डित को नियुक्त करे। यह उन तारों की गति में भी प्रभु की महिमा को देखता है, इसे तारे प्रभु का स्तवन करते प्रतीत होते हैं। यह इन नक्षत्रों की विद्या का अध्ययन करता हुआ प्रभु का ज्ञान प्राप्त करता है। ५८. **आशिक्षायै प्रश्निनम्**=सब विषयों का ज्ञान देने के लिए विविध प्रश्न करनेवाले अध्यापक को प्राप्त करे। वस्तुतः इस प्रश्नात्मक शैली (Questioning method) के द्वारा आचार्य विद्यार्थी के अन्दर से ही ज्ञान को बाहर लाने का प्रयत्न करता है। ५९. **उपशिक्षायै**=उपशिक्षा के लिए, अर्थात् Training के लिए **अभिप्रश्निनम्**=नाना प्रकार के प्रश्न पूछनेवाले को नियत करे। उन भावी शिक्षकों को प्रश्न पूछने का प्रकार भी तो सिखाना ही है। ६०. **मर्यादायै**=मर्यादा के लिए **प्रश्नविवाकम्**=न्यायाधीश को नियत करे। यह अपराधियों को उचित दण्ड देते

हुए कुप्रवृत्तियों का दमन करता है और इस प्रकार मर्यादा की स्थापना करता है।

भावार्थ—राजा शिक्षा के प्रसार के लिए ऐसे अध्यापकों को नियत करे जो विद्यार्थियों के ज्ञान को प्रश्नात्मक शैली से निरन्तर बढ़ानेवाले हों।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**विद्वान्**। छन्दः—**स्वराडतिशक्वरीः**। स्वरः—**पञ्चमः**।

अर्म के लिए हस्तिप को

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपꣳश्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥ ११॥

६१. **अर्मेभ्यः**=गन्तव्य प्रदेशों के लिए **हस्तिपम्**=हाथियों के पालनेवाले व महावत को प्राप्त करे। ये हाथी कठिन, दुर्गम व गम्भीर स्थानों में भी हमें प्राप्त करानेवाले होंगे। ६२. **जवाय**=वेग के लिए **अश्वपम्**=अश्वपाल को नियत करे। यह घोड़ों के द्वारा शीघ्रता से स्थानान्तर पर पहुँचानेवाला होगा। ६३ **पुष्ट्यै**=पोषण के लिए **गोपालम्**=गोरक्षकों को नियत करे। ये उत्तम गोदुग्ध प्राप्त कराके हमारा पोषण करेंगे। ६४. **वीर्याय**=वीर्य के लिए **अविपालम्**=अवि (भेड़) के पालनेवाले को नियत करे। भेड़ का दूध 'स्थौल्यमेदहरम्' मोटापे व प्रमेहों (Diabetes) को दूर करनेवाला है। ६५. **तेजसे**=तेजस्विता के लिए **अजपालम्**=बकरियों को पालनेवाले को नियत करे। इन बकरियों का दूध 'सर्वरोगापहम्'=सब रोगों का हरण करनेवाला है, रोगहरण द्वारा यह हमें तेजस्वी बनाता है। ६६. **इरायै**=अन्न की वृद्धि के लिए **कीनाशम्**=किसान को प्राप्त करे। वस्तुतः इन किसानों की स्थिति के ठीक होने पर ही देश की स्थिति का ठीक होना सम्भव है। ६७. (क) **कीलालाय**=पेय पानी के लिए **सुराकारम्**=शुण्डायन्त्र से पानी को वाष्पीभूत करके फिर से द्रवीभूत करनेवाले को नियत करे। डिस्टिल्ड पानी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हितकर है। (ख) **कीलालाय**=अन्न, फल आदि के रस के लिए **सुराकारम्**=रस का अभिषव करनेवाले को नियत करे। ६८. **भद्राय**=कल्याण के लिए **गृहम्**=घरों के रक्षक को (पहरेदारों को) नियत करे। पहरेदारों के होने पर चोरी आदि न होने से प्रजा का भद्र व कल्याण होता है। ६९. **श्रेयसे**=कल्याण के लिए **वित्तधम्**=वित्त के धारण करनेवाले को प्राप्त करे। 'वित्तधम्' वह व्यक्ति है जो धनी है, वित्त का धारण करनेवाला है और औरों के लिए धन को देता हुआ धन के द्वारा उनका धारण करता है। इस व्यक्ति का कल्याण क्यों न होगा? ७०. **आध्यक्ष्याय**=अध्यक्षता के कार्य के लिए **अनुक्षत्तारम्**=कर्मसचिवों Secretaries को नियत करे क्षत्ता Ministers हैं और अनुक्षत्ता Secretaries हैं।

भावार्थ—राष्ट्र में गोप, अश्वपाल, अविपाल व किसान आदि का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**विद्वान्**। छन्दः—**विराट्संकृतिः**। स्वरः—**गान्धारः**।

भा के लिए दार्वाहार को

भायै दार्वाहारं प्रभायाऽअग्नेधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽ उपसेक्तारमवऽऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ १२॥

७१. **भायै**=अग्नि के लिए **दार्वाहारम्**=लकड़हारे को प्राप्त करे। घर में अग्नि के लिए मुख्य साधन लकड़ी ही है। कोयला भी लकड़ी से ही तैयार होता है। ७२. **प्रभायै**

अग्न्येधम्=प्रभा के लिए, विशेष प्रकाश के लिए अग्नि को दीप्त करनेवाले को प्राप्त करे। ७३. **ब्रध्नस्य विष्टपाय**=सूर्यलोक के लिए **अभिषेक्तारम्**=ज्ञान-जल में अभिषेक करनेवाले को प्राप्त करे। ७२ में यह कहा था कि प्रकाश के लिए अग्नि को दीप्त करनेवाले को नियत करे, अर्थात् जो अपनी ज्ञानाग्नि से विद्यार्थी में ज्ञानाग्नि को समिद्ध करता है, उस विशेष प्रकाशक को नियत करे। ७३ में कहते हैं कि 'इस ज्ञान-जल में स्नान करनेवाले को सूर्यलोक में जन्म लेनेवाला जाने। ७४. **परिवेष्टारम्**=परोसनेवाले को **वर्षिठाय नाकाय**=सर्वोत्तम स्वर्गलोक के लिए नियुक्त करे, उत्तम स्वर्गलोक की प्राप्ति तभी होती है जब मनुष्य बाँटकर खाना सीखता है। ७५. **देवलोकाय**=देवलोक के लिए **पेशितारम्**=बुराइयों को चूर्णित करनेवाले को प्राप्त करे (पिश=पीसना)। बुराइयों को समाप्त करके सौन्दर्य का निर्माण करनेवाले को जाने (पेशः=सौन्दर्य, shape) ७६. **मनुष्यलोकाय**=मनुष्यलोक के लिए **प्रकरितारम्**=शत्रुओं=असुरों को उखाड़ फेंकनेवाले को अथवा ज्ञानादि का विकरण=फैलाव करनेवाले को प्राप्त करे। इसी प्रकार मनुष्यों की स्थिति ऊँची हो सकती है। ७७. **सर्वेभ्यः लोकेभ्यः**=सब लोगों के कल्याण के लिए **उपसेक्तारम्**=उनमें ज्ञानादि गुणों का उपसेचन करनेवाले को नियुक्त करे। ७८. **अवऋत्यै**=नीचाचरण को रोकने के लिए तथा **वधाय**= वधों को (क़त्लों को) दूर करने के लिए **उपमन्थितारम्**=प्रजाओं का आलोडन करनेवाले को प्राप्त करे, उस अफसर को, जो प्रजाओं में विचरण करता हुआ ऐसे कार्यों को प्रजा में न होने दे। ७९. **मेधाय**=संगम के लिए, अर्थात् सभा-समाजों में लोगों से मिलने-जुलने के लिए **वासःपल्पूलीम्**=कपड़े धोनेवाली को प्राप्त करे, अर्थात् इनसे कपड़ों को धो दिये जाने पर ही तो हम सभा-समाज में जा सकेंगे। मैले कपड़ों से तो मेलजोल सम्भव नहीं। ८०. **प्रकामाय**=उत्कृष्ट, लौकिक आनन्द के लिए **रजयित्रीम्**=रञ्जन करनेवाली को प्राप्त करे, उस स्त्री को प्राप्त करे जो अपने मधुर व्यवहार से अपने पति को रञ्जित करनेवाली होती है।

भावार्थ—उत्तम लोकों की प्राप्ति के लिए त्याग व अशुभवृत्ति-विनाश आवश्यक है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**ईश्वरः**। छन्दः—**कृतिः**। स्वरः—**निषादः**।

ऋति के लिए स्तेनहृदय को

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्रायायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्याऽअश्वसादꣳ स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥ १३॥

८१. **ऋतये**=शत्रु-सैन्य के लिए **स्तेनहृदयम्**=(हृदयस्य स्तेनः) हृदय को चुरा लेनेवाले को, अर्थात् उसके दिल की बात का पता लगानेवाले को (One who can draw out) नियत करे (ऋति=An army)। ८२. **वैरहत्याय**=वैर व हत्या आदि कार्यों के लिए **पिशुनम्**=चुग़लखोर को नियत करे, वह इधर की बातें उधर करके इन कार्यों को सुविधा से कर पाते हैं। ८३. **विविक्त्यै**=किसी कार्य के विवेक के लिए, उसके गुण-दोष के परीक्षण के लिए **क्षत्तारम्**=सुविश्लिष्ट विचारवाले मन्त्री को प्राप्त करे। ८४. **औपद्रष्ट्र्याय**=सब कार्यों के बारीकी से निरीक्षण के लिए **अनुक्षत्तारम्**=कर्मसचिव (Secretary) को नियत करे। ८५. **बलाय**=सेना के लिए **अनुचरम्**=आज्ञानुसार कार्य करनेवाले को नियत करे। सैनिकों का कार्य आज्ञा मानना ही है, इसके औचित्य का विचार करना उनका कार्य नहीं। ८६. **भूम्ने**=बाहुल्य व सुख के लिए **परिष्कन्दम्**=चारों ओर भ्रमण करके दोषों को दूर

करनेवाले अफ़सरों को नियत करे, अथवा सब स्थानों पर भ्रमण करके उचित 'कर' उगाहनेवाले को (स्कन्दयति to collect) नियत करे। ८७. **प्रियाय**=राष्ट्र में प्रेम के वर्धन के लिए **प्रियवादिनम्**=ऐसे अध्यक्षों को नियत करे जा कड़वा नहीं बोलते। ८८. **अरिष्ट्यै**=राष्ट्र की अहिंसा के लिए **अश्वसादम्**=घुड़सवार फ़ौज नियत करे। ८९. **स्वर्गाय लोकाय**=स्वर्गलोक के लिए **भागदुघम्**=अपने भाग का ही दोहन करनेवाले को प्राप्त करे। राजा को चाहिए कि प्रजाओं में अपने ही भाग के दोहन की प्रवृत्ति को पैदा करे। गौ का दोहन बछड़े का भाग छोड़कर ही करे, राजा भी प्रजा से कर का दोहन उचित भाग के रूप में ही करे। ९०. **वर्षिठाय नाकाय**=सर्वोत्तम स्वर्गलोक के लिए **परिवेष्टारम्**=परोसनेवाले को प्राप्त करे। जो स्वयं सारा नहीं खा जाता, अपितु औरों को परोसकर बचे हुए को खाता है, वह अवश्य सर्वोत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त करता है।

भावार्थ—स्तेनहृदय लोगों का भी राष्ट्र के लिए सुन्दर उपयोग हो सकता है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**निचृदत्यष्टिः**। स्वरः—**गान्धारः**।

मन्यु के लिए अयस्ताप को

मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तारꣳ शोकायाभिसत्तारं क्षेमाय विमोक्तारमुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतꣳ शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं यमायासूम्॥ १४॥

९१. **मन्यवे**=ज्ञान की वृद्धि के लिए **अयस्तापम्**=धातुओं के सन्तप्त करनेवाले को प्राप्त करे। यह धातुओं को सन्तप्त करके उनको विविध रूपों में ढालनेवाला, जैसे उन धातुओं को सुन्दर रूप प्रदान करता है, इसी प्रकार आचार्य (भृगु) विद्यार्थी को तपस्या की अग्नि में तपाकर उत्तम ज्ञानी का रूप प्राप्त कराता है। ज्ञान-प्राप्ति के लिए तप आवश्यक है, तप के बिना ज्ञान-प्राप्ति सम्भव नहीं। ९२. **क्रोधाय**=क्रोध को दूर करने के लिए **निसरम्**=(नितरां सर्तारम्—म०) निरन्तर कार्य में लगे रहनेवाले को प्राप्त करे, खाली आदमी को क्रोध आया ही करता है। ९३. **योगाय**=योग के लिए, प्रभु व दिव्यता के साथ सम्पर्क के लिए **योक्तारम्**=प्रतिदिन चित्तवृत्तिनिरोध का अभ्यास करनेवाले को प्राप्त करे, प्रतिदिन ध्यान करनेवाला ही प्रभु को प्राप्त करेगा। ९४. **शोकाय**=(शुच दीप्तौ) दीप्ति के लिए **अभिसत्तारम्**=आन्तरिक व बाह्य उन्नति के लिए उद्योग करनेवाले को, अभ्युदय व निःश्रेयस दोनों की साधना करनेवाले को, श्रेय व प्रेय दोनों का आक्रमण करनेवाले को, ज्ञान व योग की व्यवस्थिति करनेवाले को प्राप्त करे। केवल ऐहिक उन्नति से जीवन दीप्त नहीं बनता, ऐहिक उन्नति के साथ पारलौकिक उन्नति का मेल आवश्यक है। ९५. **क्षेमाय**=कल्याण के लिए **विमोक्तारम्**=स्वतन्त्र करनेवाले को प्राप्त करे। 'सर्वं परवशं दुःखम्' परवशता में ही दुःख है। हम काम, क्रोध, लोभ के बन्धन में हैं तो कल्याण सम्भव ही नहीं। इन बन्धनों से अपने को छुड़ाएँगे तभी कल्याण होगा। ९६. **उत्कूलनिकूलेभ्यः**='ऊर्ध्वनीचतटेभ्यः' ऊँचे-नीचे स्थानों के लिए, अर्थात् जीवन के ऊँच-नीच (Up and down) के लिए, ऊँच-नीच में न घबराने के लिए **त्रिष्ठिनम्**=(त्रिषु तिष्ठति) शरीर, मन व बुद्धि तीनों की उन्नति में स्थित होनेवाले को अथवा 'धर्मार्थकाम' तीनों में समरूप से स्थित होनेवाले को अथवा काम, क्रोध व लोभ तीनों को काबू करनेवालों को प्राप्त करे। ऐसा व्यक्ति ही जीवन के ऊँच-नीच में स्थितप्रज्ञ रह पाता है। ९७. **वपुषे**=शरीर के लिए,

शरीर के सौन्दर्य के लिए **मानस्कृतम्**=प्रत्येक वस्तु को मानपूर्वक, माप-तोलकर करनेवाले को प्राप्त करे। 'मात्रा बलम्' शरीर का बल प्रत्येक वस्तु का माप-तोलकर ही प्रयोग करने में है। ९८. **शीलाय**=सुन्दर शील के लिए **अञ्जनीकारीम्**=दृष्टिदोष को दूर करनेवाली को प्राप्त करे। यहाँ स्त्रीलिङ्ग का प्रयोग पत्नी की महत्ता को व्यक्त कर रहा है। घर में पत्नी एक भाई के दृष्टिकोण को विकृत कर देती है और घर के शील का नाश हो जाता है, बड़ों का आदर व परस्पर प्रेम न रहकर लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं। ९९. (क) **निर्ऋत्यै**=आपत्ति के लिए, अर्थात् आपत्ति के समय काम आने के लिए **कोशकारीम्**=कोश बढ़ानेवाली को प्राप्त करे। 'आपदर्थं धनं रक्षेत्' में यही भावना है। (Rainy Days) के लिए कुछ-न-कुछ बचाना' यह नागरिक शास्त्र का सिद्धान्त इसी बात को व्यक्त करता है। (ख) यह भी अर्थ संगत है कि राजा यदि कोशवृद्धि की नीति को अपनाये रक्खेगा तो आपत्ति को ही बढ़ाएगा, प्रजाहित का प्रथम स्थान होना चाहिए नकि कोशवृद्धि का। १००. **यमाय**=नियन्त्रण के लिए **असूम्**=अस्त्रवर्षा करनेवाली सेना को प्राप्त करे। यदि कभी नियन्त्रण में कठिनाई आती है तो शस्त्रधारी सेना को बुलाना ही पड़ता है।

भावार्थ—राष्ट्र की उत्तम व्यवस्था के लिए उचित कर आदि लेनेवाले व्यक्तियों को नियत करे।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**विराट्कृतिः**। स्वरः—**निषादः**॥

यम के लिए यमसू को

यमाय यमसूमथर्वभ्यो ऽवतोकाꣳ संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजाता-मिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जराꣳ संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्यो ऽजिनसन्धꣳ साध्येभ्यश्चर्मघ्नम्॥ १५॥

१०१. **यमाय**=नियन्त्रण के लिए **यमसूम्**=नियमोपनियम बनानेवाली सभा को प्राप्त करे, आजकल की भाषा में 'विधान-सभा' का निर्माण करे। १०२. **अथर्वभ्यः**=(न थर्वति) स्थिरवृत्तिवाले लोगों के लिए, ध्यान के अभ्यासियों के लिए **अवतोकाम्**=रक्षक सेना को नियत करे। १०३. **संवत्सराय**=उत्तम निवास के लिए **पर्यायिणीम्**=क्रम को जाननेवाली को प्राप्त करे। वस्तुतः जो पत्नी 'किस क्रम में कार्य करने हैं' इस बात को समझती है, वह कार्यों को सुचारुरूपेण सम्पन्न कर पाती है। १०४. **परिवत्सराय**=पूर्ण निवास के लिए, एक-एक कोश में उत्तम निवास के लिए **अविजाताम्**=ब्रह्मचारिणी (अ-विजात) को प्राप्त करे, अर्थात् गृहस्थ में आने से पहले इस बात का ध्यान किया जाए कि ब्रह्मचारिणी ने सब कोशों का विकास उत्तमता से किया है। १०५. **इदावत्सराय**=वर्त्तमान काल में निवास के लिए **अतीत्वरीम्**=अतिशयेन क्रियाशील को प्राप्त करे। जो क्रियाशील नहीं होती वह या तो भूतकाल की उज्ज्वलता का गान करती रहती है या भविष्यत् के स्वप्न लेती रहती है। १०६. **इद्वत्सराय**=निश्चयात्मक निवास के लिए, असंशयात्मा होकर जीवन को चलाने के लिए **अतिष्कद्वरीम्**=अतिशय ज्ञानवाली (स्कन्द गति=ज्ञान) को प्राप्त करे। ज्ञान ही मनुष्य को संशय से ऊपर उठानेवाला है। १०७. **वत्सराय**=उत्तम निवास के लिए **विजर्जराम्**=(विगतजर्जराम्) अशिथिल शरीरवाली को नियत करे। शिथिल शरीरवाली से निवास के लिए आवश्यक कर्मों को करना सम्भव नहीं होता। १०८. **संवत्सराय**=उत्तम निवास के लिए **पलिक्नीम्**=श्वेत केशोंवाली, अर्थात् अनुभव-सम्पन्न महिला को नियत करे। १०९. **ऋभुभ्यः**=शिल्पियों के लिए, रथ आदि का निमार्ण करनेवालों के लिए

अजिनसन्धम्=चर्म के सन्धाता को नियत करे। इन दोनों का परस्पर सम्मिलित कार्य होने पर ही रथ आदि का ठीक से निर्माण हो सकेगा। रथकार उपस्थ=Seat आदि बनाएगा, तो उनपर गद्दी आदि को यह अजिनसन्धाता जमाएगा। ११०. **साध्येभ्यः**=अपूर्ण पदार्थों को पूर्ण बनानेवालों के लिए (Finishing touches) देनेवालों के लिए **चर्मघ्नम्**=चमड़ा कमानेवाले (Leather tanner) को नियत करे। 'साध्य रथ की कमी को दूर करेगा तो यह 'चर्मघ्न' चमड़े की कमी को दूर करेगा और इस प्रकार ये दोनों मिलकर रथ को पूर्ण ठीक कर देंगे।

भावार्थ—जहाँ राष्ट्र का उत्तम सञ्चालन, व्यवस्थापिका, सभादि के होने से होता है वहाँ घर में उत्तम निवास के लिए कार्यों के क्रम को सम्यक् समझनेवाली पत्नी का होना आवश्यक है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**विराट्कृतिः**। स्वरः—**निषादः**।

सरों के लिए धीवर को

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय कैवर्त्तं तीर्थेभ्यऽआन्दं विषमेभ्यो मैनालꣳ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातꣳ सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥ १६॥

१११. **सरोभ्यः**=तलाबों के लिए **धैवरम्**=धीवर सन्तानों को नियत करे। तालाबों को स्वच्छ रखना इनका कार्य हो। ११२. **उपस्थावराभ्यः**=तालाबों के समीप (उप) लगी वाटिकाओं के लिए (स्थावराभ्यः) **दाशम्**=माली आदि भृत्यों को प्राप्त करे। उन पौधों में नियमपूर्वक पानी आदि देना इनका कार्य हो। ११३. **वैशन्ताभ्यः**=जोहड़ों के लिए (Pools) **बैन्दम्**=उन जोहड़ों से कमलगट्टे व सिंघाड़े आदि प्राप्त करनेवालों को (विद् लाभे) नियत करे। ११४. **नड्वलाभ्यः**=नड़ों व सरकण्डोंवाले प्रदेशों के लिए **शौष्कलम्**= (शुष्=कला) उन तृणों को सुखाकर कलात्मक वस्तुएँ बनानेवाले को नियत करे। ११५. **पाराय मार्गारम्**=पार जाने के लिए मार्ग को जाननेवाले को अथवा जल-जन्तुओं का शिकार कर सकनेवालों को नियत करे (मृगणाम् अरिः, तस्यापत्यम्) ११६. **अवाराय**=नदी में उरले किनारे पर लौट आने के लिए **कैवर्तम्**=केवट को नियत करे। ११७. **तीर्थेभ्यः**=तीर्थों के लिए, घाट आदि के लिए अथवा तीर्थस्थानों के लिए जोकि प्रायः नदी के किनारे होते हैं **आन्दम्**=(अदि बन्धने) बाँध बाँधनेवाले को नियत करे। ११८. **विषमेभ्यः**=विषम स्थानों के लिए, जलों में संकटयुक्त स्थानों के लिए, जहाँ कि मगरमच्छ आदि का भय हो **मैनालम्**=जालों द्वारा (मीनान् अलति वारयति) मछली आदि के निवारण करनेवाले को नियत करे। ११९. **स्वनेभ्यः**=नाना प्रकार के शब्दों के लिए **पर्णकम्**=पहरेदार को (पॄ पालनपूरणयोः) नियुक्त करे अथवा **स्वनेभ्यः**=उत्तम स्वरों के लिए **पर्णकम्**=तुरही (वाद्यविशेष) बजानेवाले को प्राप्त करे। १२. **गुहाभ्यः**=पर्वत कन्दराओं के लिए, पर्वत-कन्दराओं में शेर आदि के खतरे से बचने के लिए **किरातम्**=भीलों को प्राप्त करे। १२१. **सानुभ्यः**=पर्वत-शिखरों के लिए **जम्भकम्**=(जभि नाशने) हिंस्र-पशुओं के नाश करनेवाले को नियत करे और १२२. **पर्वतेभ्यः**=पर्वतों के लिए **किम्पूरुषम्**=छोटे कदवाले पुरुषों को प्राप्त करे, पर्वतों पर ऐसे ही व्यक्ति सुविधा से कार्य कर सकते हैं, पर्वतारोही पुरुष छोटे कद के ही होने चाहिएँ।

भावार्थ—तालाबों व पहाड़ों पर कार्यव्यवस्था के लिए तदुपयुक्त पुरुषों को नियत करना चाहिए। तालाबों के लिए धीवर आदि तो पर्वतों के लिए किरात आदि।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौः**। छन्दः—**विराड्धृतिः**। स्वरः—**ऋषभः**।

बीभत्स के लिए पौल्कस को

बीभत्सायै पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्याऽ अपगल्भꣳ संꣳशराय प्रच्छिदम्॥ १७॥

१२३. **बीभत्सायै**=हत्या आदि बीभत्स कार्यों के लिए **पौल्कसम्**=अन्त्यजजाति के व्यक्ति को प्राप्त करे। १२४. **वर्णाय**=सौन्दर्य निर्माण के लिए **हिरण्यकारम्**=सुवर्णकार को प्राप्त करे, वह सोने पर किस प्रकार चित्रकला द्वारा सौन्दर्य का उत्पादन करनेवाला होता है? १२५. **तुलायै**=तुला के लिए, तोलने आदि के कार्यों के लिए **वाणिजम्**=वणिक्पुत्र (बाणिया) को प्राप्त करे। १२६. **पश्चादोषाय**=पीछे दोष देने के लिए **ग्लाविनम्**=अहृष्ट, अशान्त को प्राप्त करे (ग्लै हर्षक्षये), अर्थात् अप्रसन्न रहने के स्वभाववाला व्यक्ति सदा पीठ पीछे दोषों का उद्घाटन करता है अथवा पश्चादोष (back biter) कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। १२७. **विश्वेभ्यः भूतेभ्यः**=सब प्राणियों के हित के लिए **सिध्मलम्**=(सिध्माः सुखसाधकाः विद्यन्ते यस्य तम्-द०) सुखसाधक पदार्थों से युक्त पुरुष को नियत करे। १२८. **भूत्यै जागरणम्**=कल्याण के लिए जागरण को प्राप्त करे, अर्थात् जागनेवाले का ही कल्याण होता है, ऐसा समझे। १२९. **अभूत्यै स्वपनम्**=यह भी स्पष्ट है कि सोना, सोते रहना, अपने भले को न सोचना, अकल्याण के लिए होता है। १३०. **आर्त्यै**=पीड़ा के लिए **जनवादिनम्**=इधर-उधर लोकनिन्दा फैलानेवाले को प्राप्त करे। १३१. **व्यृद्ध्यै**=असमृद्धि व दरिद्रता के लिए **अपगल्भम्**=प्रगल्भतारहित पुरुष को प्राप्त करे। राजा के मन्त्री प्रगल्भ व चतुर न होंगे तो कोश खाली हो जाएगा। प्रगल्भता के अभाव में गृहस्थ दरिद्र ही बना रहेगा। १३२. **संशराय**=उत्तमता से हिंसा के लिए **प्रच्छिदम्**=उत्तम छेदनकर्ता को प्राप्त करे, अर्थात् वधदण्ड के लिए छेदनक्रिया में निपुण व्यक्ति को नियत करे।

भावार्थ—राष्ट्र में बीभत्स व छेदनादि कार्यों में निपुण व्यक्ति की नियुक्ति करनी है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**निचृत्प्रकृतिः**। स्वरः—**धैवतः**।

अक्षराज के लिए कितव को

अक्षराजायं कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनंमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽउप तिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्॥ १८॥

१३३. **अक्षराजाय**=राजा की आँखरूप गुप्तचरों के (चारैः पश्यन्ति राजानः) अध्यक्ष पद के लिए **कितवम्**=(कित् ज्ञाने) अत्यन्त समझदार पुरुष को प्राप्त करे। १३४. **कृताय**=किये जा चुके, सम्पन्न कर्मों के लिए **आदिनवदर्शम्**=उन कर्मों में रह गये दोषों को देखनेवाले पुरुष को प्राप्त करे, ताकि उन दोषों को दूर किया जा सके। १३५. **त्रेतायै**='अग्नित्रयमिदम् त्रेता' गार्हपत्य, आहवनीय व दक्षिणाग्नि—इन तीन अग्नियों के कार्यों को ठीक रखने के लिए **कल्पिनम्**=कल्पशास्त्र में निपुण व्यक्ति को प्राप्त करे। इन कल्पसूत्रों में यज्ञों की वेदियों के विधि-विधानों का प्रतिपादन है। उनको ठीक से जाननेवाला यज्ञ के कार्यों को ठीक चला सकेगा। १३६. **द्वापराय**=(द्वौ परौ यस्य) धर्म, और मोक्ष ही पर—अन्तिम उद्देश्य हैं, जिसके 'धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष' में एक सीमा पर धर्म और दूसरी

सीमा पर मोक्ष ही जिसके जीवन के अङ्ग है, उसके लिए **अधिकल्पिनम्**=अधिक सामर्थ्यवाले पुरुष को नियत करे। यह धर्मपूर्वक राष्ट्र के कार्य करता हुआ, दोषों से मुक्त रहता हुआ, अन्त में मोक्ष को प्राप्त करेगा। सामान्य व्यक्ति तो अर्थ व काम में ही फँस जाता है। १३७. **आस्कन्दाय**=चारों ओर ज्ञान के प्रसार के द्वारा (गति=ज्ञान) दोषों के शोषण के लिए **सभास्थाणुम्**=सभा में स्थिरता से रहनेवाले को नियत करे। यह उत्तम नियमों के निर्माण व प्रचार के द्वारा प्रजा के दोषों का शोषण करना अपना कार्य समझे। १३८. **गोव्यच्छम्**=गौ को पीड़ित करनेवाले को **मृत्यवे**=मृत्यु के लिए प्राप्त करे। १३९. **गोघातम्**=गोहत्या करनेवाले को **अन्तकाय**=बधक के लिए प्राप्त करे, अर्थात् गोघाती को वधदण्ड दे। १४०. **गां विकृन्तन्तम्**=गौ को काटते हुए पुरुष को **यः**=जो **भिक्षमाणः**=भीख माँगता हुआ **उपतिष्ठति**=उपस्थित होता है उसे **क्षुधे**=भूख के लिए प्राप्त करे, अर्थात् ऐसे व्यक्ति को भूखा रखने का दण्ड दिया जाए। १४१. **दुष्कृताय**=पापों को दूर करने के लिए **चरकाचार्यम्**=भ्रमणशील आचार्यों को स्थित करे, जो घूम-फिरकर प्रजा को ज्ञान देते हुए दुष्कृत्यों को दूर करे। १४२. **पाप्मने**=पापी पुरुष के लिए **सैलगम्**=(सैलेन सह गच्छति) अस्त्रधारी पुरुष को नियत करे।

भावार्थ—राष्ट्र में गोहत्या आदि पापों को दूर करने का पूर्ण प्रयत्न किया जाए।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**भुरिग्धृतिः**। स्वरः—**ऋषभः**।

प्रतिश्रुत्क के लिए अर्तन को

प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्मम्वरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम्॥ १९॥

१४३. **प्रतिश्रुत्काय**=प्रतिज्ञापूर्ति के लिए **अर्तनम्**=प्रेरक को नियत करे। यह निरन्तर उत्तम प्रेरणा देता हुआ उन्हें प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए उत्साहित करता रहेगा। १४४. **घोषाय**=उद्घोषणा के लिए **भषम्**=ऊँची आवाज़ से बोलनेवाले को प्राप्त करे। १४५. (क) **अन्ताय**=सिद्धान्त पर पहुँचने के लिए **बहुवादिनम्**=उत्तम वक्ता को नियत करे। (ख) इस वाक्य में ऐसी भावना भी सूचित होती है कि बहुत बोलनेवाले को अन्त के लिए जाने, अर्थात् 'इसका आयुष्य अल्प हो जाता है' ऐसा समझे। १४६. **अनन्ताय**=उस अनन्त प्रभु के उपदेश के लिए **मूकम्**=मौन धारण करनेवाले को प्राप्त करे, क्योंकि ईश का उपदेश तो **'गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम्'** के अनुसार मौन से ही दिया जाता है। साथ ही कम बोलनेवाले को दीर्घायुष्यवाला जाने। १४७. **शब्दाय**=शब्द करने के लिए, पक्षी आदि को भयभीत करने के लिए (आवाज़) करने के लिए **आडम्बराघातम्**=ढोल बजानेवाले को प्राप्त करे। १४८. **महसे**=उत्सवों के लिए, उत्सवों में सभ्यों के विनोदार्थ **वीणावादम्**=वीणा बजानेवाले को प्राप्त करे। १४९. **क्रोशाय**=लोगों को एकत्र होने की सूचना देने के लिए (आह्वान के लिए) **तूणवध्मम्**=ढक्का बाजनेवाले को प्राप्त करे। १५०. **अवरस्पराय**= आस-पास के लोगों को प्रार्थना आदि के लिए बुलाना हो तो **शंखध्म्**=शंख बजानेवाले को प्राप्त करे। १५१. **वनाय**=वनों की रक्षा के लिए **वनपम्**=वनों के रक्षक को नियत करे। १५२. **अन्यतः अरण्याय**=दूसरे घने जंगलों के लिए **दावपम्**=वनाग्नि से रक्षा करनेवाले को नियत करे। नगर के समीप साधारण वन की रक्षा के लिए वनाय की नियुक्ति है 'इन उपवनों का कोई दुरुपयोग न करे' इसके लिए निगरानी करनेवाले को रखना है और घने जंगलों की रक्षा के लिए दावपों की नियुक्ति है। उन वनों में अचानक आग लगने से लाखों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

भावार्थ—जहाँ उद्घोषणा आदि के लिए ढोल आदि बजानेवाले की नियुक्ति करनी है वहाँ वनों की रक्षा के लिए रक्षापुरुषों को भी नियुक्त करना है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**भुरिगतिजगती**। स्वरः—**ऋषभः**।

नर्म के लिए पुँश्चलू को

नर्माय पुँश्चलूꣳ हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्युं गणकमभिक्रोशकं तान्महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान्नृत्तायानन्दाय तलवम्॥ २०॥

१५३. **नर्माय**=क्रीड़ाओं के लिए **पुँश्चलूम्**=लोगों में चहल-पहल कर देनेवाले को नियत करे। ये लोगों में खेल देखने के लिए उत्साह पैदा करेंगे। १५४. **हसाय**=हास्य के लिए, केवल आमोद-प्रमोद के लिए **कारिम्**=अनुकरण करनेवाले को नियत करे। १५५. **यादसे**=जल-जन्तुओं के लिए **शाबल्याम्**=शबर स्त्रियों को नियत करे। १५६. १५७. १५८. **महसे**=तेजस्विता के लिए, राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए **ग्रामण्यम्**=ग्रामनेता, नम्बरदार **गणकम्**=हिसाब-किताब रखनेवाला पटवारी या क्लर्क तथा **अभिक्रोशकम्**=उद्घोषणापूर्वक सबको एकत्र करनेवाले **तान्**=इन तीनों को प्राप्त करे। प्रत्येक ग्राम में 'ग्रामणी, गणक व अभिक्रोशक' की व्यवस्था होनी चाहिए तभी राज्य-प्रबन्ध तेजस्वी बना रहता है, अन्यथा व्यवस्था ढीली हो जाती है। १५९. **नृत्ताय**=नृत्य के लिए **वीणावादम्**=वीणा बजानेवाले को, १६०. **पाणिघ्नम्**=हाथ से तबला आदि बाजानेवाले को १६१. **तूणवध्म्**=तुरही बजानेवाले को नियत करे। नृत्य में उत्साह लाने के लिए इनका होना आवश्यक है। इनके स्वर पर ही नृत्य चलता है। १६२. **आनन्दाय**=आनन्द के लिए, कीर्तन आदि में आनन्द की वृद्धि के लिए **तलवम्**=करताल बजानेवाले को प्राप्त करे।

भावार्थ—जहाँ ग्रामों के प्रबन्ध के लिए ग्रामणी आदि को नियत करना है, वहाँ आमोद-प्रमोद के उत्सवों के लिए वीणावादक आदि को भी प्राप्त करना है।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**भुरिगत्यष्टिः**। स्वरः—**गान्धारः**।

अग्नि के लिए पीवा को

अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनं दिवे खलतिꣳ सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं चन्द्रमसे किलासमह्ने शुक्लं पिङ्गाक्षꣳ रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥ २१॥

१६३. **अग्नये**=अग्नि के लिए, अग्नि के समीप कार्य करने के लिए **पीवानम्**=मोटे आदमी को प्राप्त करे। कार्य होने के साथ उसकी चरबी पिघलकर उसकी स्थूलता में भी उचित कमी आ जाएगी। १६४. **पृथिव्यै**=पृथिवी के लिए, पृथिवी पर बैठे-बैठे कार्य करने के लिए **पीठसर्पिणम्**=पीठेन सर्पति=बैठे-बैठे सरकनेवाले को नियत करो, उस पंगु पुरुष को नियत करे जो उठकर इधर-उधर नहीं जा सकता। १६५. **वायवे**=वायु के लिए, अर्थात् प्रचण्ड वायु में कार्य करने के लिए **चाण्डालम्**=(चण्ड अलं=शक्ति) प्रचण्ड शक्तिवाले को प्राप्त करे १६६. **अन्तरिक्षाय**=अन्तरिक्ष के लिए, ऊपर आकाश देश में कार्य करने के लिए **वंशनर्तिनम्**=बाँस पर नाच सकनेवाले को प्राप्त करे, इसे उस ऊँचे स्थान में कार्य करते हुए भय नहीं लगता। १६७. **दिवे**=द्युलोक के निरीक्षण के लिए **खलतिम्**=आकाशस्थ गोलों (पिण्डों) की गति को जाननेवाले को नियत करे। १६८. **सूर्याय**=सूर्य के निरीक्षण के लिए **हर्यक्षम्**=हरे रंग की आँखवाले को नियत करे। हरे रंग के शीशे के साथ सूर्य

का वेध लेने से आँख को हानि नहीं होती। १६९. **नक्षत्रेभ्यः**=नक्षत्रों के लिए **किर्मिरम्**=धवल वर्ण के शीशे के साथ देखनेवाले को नियत करे। १७०. **चन्द्रमसे**=चन्द्रमा के लिए, चन्द्रमा के निरीक्षण के लिए **विलासम्**=श्वेत वर्ण के शीशे से निरीक्षण करनेवाले को नियत करे। १७१. **अह्ने**=दिन में कार्य करने के लिए **शुक्लम्**=गौरवर्णवाले **पिङ्गाक्षम्**=पिङ्गाक्ष को नियत करे। **रात्र्यै**=रात्रि में काम करने के लिए **कृष्णम्**=काले रंगवाले **पिङ्गाक्षम्**=पिङ्गाक्ष को नियत करे। उस-उस समय कार्य के लिए ये व्यक्ति अधिक उपयुक्त होते हैं।

भावार्थ—राष्ट्र में प्रत्येक स्थान पर तदुपयुक्त पुरुषों को ही कार्यार्थ नियुक्त करना चाहिए।

ऋषिः—**नारायणः**। देवता—**राजेश्वरौ**। छन्दः—**निचृत्कृतिः**। स्वरः—**निषादः**।

विरूप पुरुष

अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्लं चातिकृष्णं चातिकुल्वं चातिलोमशं च। अशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुँश्चली कितवः क्लीबोऽशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः॥ २२॥

१. **अथ**=अब विविध स्थानों पर उपर्युक्त पुरुषों की नियुक्ति के बाद **एतान्**=इन **अष्टौ**=आठ **विरूपान्**=परस्पर विरुद्ध रूपवाले व विकृत रूपवाले पुरुषों को **आलभते**=प्राप्त करता है। (क) **अतिदीर्घम्**=बड़े लम्बे कदवाले, (ख) **च**=और **अतिह्रस्वम्**=बहुत छोटे कदवाले=बौने को, (ग) **च अतिस्थूलम्**=और अत्यन्त स्थूलकाय को (घ) **च**=तथा **अतिकृशम्**=अत्यन्त दुर्बल शरीरवाले को (ङ) **च**=और **अतिशुक्लम्**=एकदम गौरवर्णवाले को **च**=तथा (च) **अतिकृष्णम्**=अत्यन्त काले रूपवाले को (छ) **च**=और **अतिकुल्वम्**=एकदम बालों से रहित को **च**=तथा (ज) **अतिलोमशम्**=सर्वत्र बालों से व्याप्त अङ्गवाले को। २. **अशूद्राः अब्राह्मणाः**=यदि ये विरूप पुरुष शूद्र व ब्राह्मण न हों तो **प्राजापत्याः**=प्रजापति के ही समीप रहने योग्य हैं। शूद्र तो श्रम में लगा रहकर लोगों की कृपा का ही पात्र रहेगा, और ब्राह्मण ज्ञान के कारण आदर का पात्र बनेगा, परन्तु ये आठ विरूप वैश्य व क्षत्रिय तमाशे का, लोगों की उत्सुकता का कारण बनेंगे और सामान्य कार्यक्रम में पर्याप्त विघ्न के कारण हो जाएँगे। ३. इसी प्रकार **मागधः**=भाट, **पुँश्चली**=असंयत जीवनवाली स्त्री **कितवः**=जुआरी **क्लीबः**=कमज़ोर—ये चारों भी **अशूद्राः**=शूद्र नहीं होते, शूद्र में मागध बनने की योग्यता नहीं होती, काम में लगे रहने व सादा भोजन मिलने से इनका जीवन असंयमवाला नहीं होता, जुए के लिए अवकाश व धन नहीं जुटा पाते, श्रम के कारण शक्तिसम्पन्न होते हैं। इसी प्रकार ये **अब्राह्मणः**=ब्राह्मण भी नहीं होते। ज्ञानी होने तथा निर्लोभता के कारण व्यर्थ स्तुति करने की इनमें भावना नहीं होती, संयमी होते हैं, जुए से दूर रहते हैं और संयम के कारण निर्भीक व सशक्त होते हैं। **ते**=अशूद्र व अब्राह्मण मागध, पुँश्चली, कितव व क्लीब भी **प्राजापत्याः**=राजा के समीप रहने चाहिएँ। राजा को चाहिए कि इन्हें प्रजा में मिश्रित न होने दे। प्रजा में इन्हें मिश्रित होने का अवसर मिलेगा तो ये प्रजा-पतन का ही कारण बनेंगे।

भावार्थ—आठ विरूप पुरुषों को तथा मागध आदि चार को राजा प्रजा से दूर ही रखे, जिससे राष्ट्र का कार्य सुचारुरूपेण चलता रहे। न प्रजा तमाशा देखने में लग जाए और न ही आचरण से गिर जाए।

सूचना—राष्ट्र में सबको यथोचित कार्यों में लगाना ही 'पुरुषमेध' हैं (मेध=संगम)। 'पुरुषमेध' के ठीक होने पर ही राज्य का सारा ऐश्वर्य बढ़ता है।

इति त्रिंशोऽध्यायः॥